राजकुमार कुम्भज की कविताएँ

राजकुमार कुम्भ, 12 फ़रवरी, 1947

अनेक महत्वपूर्ण तथा चर्चित कविता-संकलनों में कविताएँ संकलित/ देश की लगभग सभी महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ पत्र-पकत्रकाओं में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित चौथा सप्तक के कवि/ अभी तक पांच दर्जन से अधिक स्वतंत्र कविता-पुस्तकें प्रकाशित

संपर्क: 331, जवाहर मार्ग, इंदौर, 452002 (म.प्र.) फ़ोन: 0731-2543380

ईमेल : rajkumarkumbhaj47@gmail.com

मनुष्य होने के शिल्प

सवाल अनगिनत हैं
और अनगिनत हैं सलीक़े भी
ज़िंदगी के, कविता के, भाषा के
लेकिन मनुष्य होने के शिल्प भी कोई कम नहीं
जो आते हैं तो कविता से ही।

माँ ने सिखाया

माँ ने बर्तन माँजना सिखाया
मैंने शब्दों को माँजना सीख लिया
माँ ने मिर्च पीसना सिखाया
मैंने दुःख को पीसना सीख लिया
माँ ने कपड़े धोना सिखाया
मैंने घृणा को धोना सीख लिया

माँ ने घर बुहारना सिखाया
मैंने शत्रु को बुहारना सीख लिया
माँ ने आग पूजना सिखाया
मैंने आग से खेलना सीख लिया
वह सिखाती गई, मैं सीखता गया
माँ ने दिखाई दुनिया, मैं देखता गया
उसने समझाया मुझे, मैं समझता गया
फिर एक दिन माँ ने बताया मुझे
कि चारों तरफ़ बढ़ गया है अन्याय
अब, छोड़कर माल-असबाब सब
घर के लिए, कविता के लिए, लड़ना होगा
और मैं लड़ने लगा।

माँ ने कहा है

माँ ने कहा है
कि हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहने का
यही, सही वक़्त हुआ जाता है
तो अब, हत्यारे को हत्यारा
और नंगे को नंगा कहना ही होगा
और मैं कहने लगा।

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर

जो समर्थक या भक्त कहलाएंगे
और जो नहीं होंगे भक्त या समर्थक
दुश्मन क़रार दे दिए जाएंगे
वे, सुबह-सुबह काम पर जाएंगे
और जब शाम होने पर लौटेंगे घर
घर की जगह देखेंगे जो कुछ भी
उस सब से भीतर तक डर जाएंगे
डराएंगे वे कुछेक ही फिर-फिर
इधर से घुसेंगे, उधर निकल जाएंगे
उधर से घुसेंगे, इधर निकल आएंगे
और फिर उजालों में उजालों की तरह
देखते ही देखते ग़ायब हो जाएंगे
डंडे लहराएंगे, झंडे फहराएंगे,
चमकाएंगे तलवारें तमतमाते चेहरे लिए
कोई भी उनसे पूछ नहीं पाएगा सवाल
मलाल होगा सभी को होगा मलाल
दूध में दरार, पानी में प्रहार देखेंगे सब
लेकिन नहीं मुनासिब कुछ भी कर पाएंगे
जाएंगे, जाएंगे, सुलगती भट्टियों की तरफ़ जाएंगे
आह भर-भरकर आँसू बहाएंगे
समर्थक या भक्त होंगे जो भी
इन्हीं-इन्हीं लोगों की हँसी उड़ाएंगे फिर-फिर
और नाचते-गाते हुए ढोलक बजाएंगे
हराएंगे वे ही जो दुश्मन कहलाएंगे

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर।

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं
और सच तो बिल्कुल भी नहीं
क्या आप जानते नहीं हैं
कि आप निगरानी में हैं?
मुनादी है कि बादल बरसेंगे
और प्यासे फिर-फिर तरसेंगे
मुनादी है कि रोटियाँ पेड़ पर लगेंगी
और भूखे फिर-फिर सपना देखेंगे
मुनादी है कि विकलांग दौड़ेंगे
और एवरेस्ट फ़तह कर लेंगे
आरामकुर्सी पर आराम करेंगे मगरमच्छ,
सभाओं में प्रवचन देंगे और आँसू बहाएंगे।

नहाएंगे ख़ून से साधू-संत, भद्र-अभद्र,
संगीतज्ञ होड़ मचाएंगे राग-दरबारी के लिए
कै करेंगे विचारक, हक़लाएंगे
लोहार सभी हो जाएंगे हलवाई
छोड़कर हुनर अपना जलेबियाँ बनाएंगे
फिर भी होंगी कहीं वे स्त्रियाँ भी होंगी
जो सुई में धागा डालती रहेंगी
सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं।